मूल-निवासी अनुवादकों और दुभाषियों के लिए मार्गदर्शन के नियम / निर्देश

TRANSLATION COMMONS

2022-2032 | INTERNATIONAL DECADE OF Indigenous Languages

ट्रांसलेशन कॉमन्स © 2025
यह रचना क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस के अंतर्गत लाइसेंस प्राप्त रचना है

विषय सूची

प्रस्तावना 4
1 उद्देश्य 4
2 इन निर्देशों/नियमों का परिचय 5
2.1 इन निर्देशों/नियमों का उपयोग करना 5
2.2 गुणवत्ता संबंधी आश्वासन 5
3 मार्गदर्शक-प्रशिक्षु संबंध की योजना बनाना 5
3.1 मार्गदर्शक-प्रशिक्षु संबंध निर्मित करने के कारण 5
3.2 भागीदार की योग्यता 5
3.3 मार्गदर्शन साझेदारी की स्थापना 6
3.4 अपेक्षाओं का प्रबंधन और प्रोत्साहन 6
3.5 व्यावहारिक व्यवस्थाएँ 6
3.6 क्षमताओं और कौशलों का मूल्यांकन करना 7
3.7 मार्गदर्शन टीम 7
3.8 मार्गदर्शकों और प्रशिक्षुओं के बीच तालमेल 8
3.8.1 टकरावों से बचना 8
3.8.2 प्रतिस्पर्धा 8
4 प्रमुख विषय-क्षेत्र 9
4.1 अनुवादक की भूमिका 9
4.1.1 अनुवाद संबंधी क्लाइंट 9
4.1.2 अनुवाद कार्य 9
4.1.3 अनुवादक कौशल 9
4.1.4 अनुवादक के साधन 10
4.2 दुभाषिये की भूमिका 10
4.2.1 भाषांतरण के तरीके 10
4.2.2 भाषांतरण की स्थितियां 11
4.2.3 भाषांतरण कौशल 11
4.2.4 असाइनमेंट की तैयारी 12
4.2.5 उपकरण 12
4.3 क्लाइंट और एजेंसी कम्युनिकेशन 12
4.4 काम के सबसे बेहतर तौर-तरीके 12
4.5 पेशेवर मूल्य 13
4.6 अवसरों का विस्तार 13

5 क्रियान्वयन और परिचालन 14
5.1 मार्गदर्शन संबंधी संसाधन 14
5.1.1 प्रशासनिक और व्यावसायिक तौर-तरीकों से जुड़े संसाधन 14
5.1.2 सॉफ्टवेयर साधन 14
5.1.3 इंटरनेट संसाधन 15
5.2 मूल्यांकन 15
5.3 भूमिकाएं और जिम्मेदारियां 15
5.4 रिकॉर्ड रखना 15
6 प्रगति की निगरानी 16
6.1 लक्ष्य निर्धारित करना 16
6.2 टाइम टेबल और कम्युनिकेशन 16
7 परिशिष्ट 17
परिशिष्ट क - आपके मार्गदर्शन कार्यक्रम के लिए टेम्प्लेट 17
परिशिष्ट B - शब्दावली 17
अभिस्वीकृतियां 18
प्रतिक्रिया (फीडबैक) 19
ट्रांसलेशन कॉमन्स 19

प्रस्तावना

यह दस्तावेज [ट्रांसलेशन कॉमन्स] द्वारा लिखे गए निर्देश /नियम की श्रृंखला जीरो टू डिजिटल का एक दस्तावेज है जिसे भाषा को डिजिटाइज करने वाली प्रथाओं के बारे में लिखा गया है। संदर्भ के लिए पाठकों को पहले [ट्रांसलेशन कॉमन्स की वेबसाइट] पर उपलब्ध जीरो टू डिजिटल के नियम/निर्देश के परिचय और अन्य निर्देश /नियम व संसाधनों को पढ़ लेना चाहिए।

'मूल-निवासी अनुवादकों और दुभाषियों के लिए मार्गदर्शन के नियम /निर्देश' द्वारा एक फ्रेमवर्क तय किया जाता है ताकि सफल मार्गदर्शन संबंध निर्मित हों।

1 उद्देश्य

पेशेवर लोगों को मौजूदा मार्गदर्शन कार्यक्रम देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है हालांकि मूल-निवासी अनुवादकों और दुभाषियों के लिए ये दुर्लभ हो सकते हैं। ये निर्देश /नियम व्यक्तिगत जरूरतों के आधार पर मार्गदर्शन संबंध निर्मित करने, प्रबंधित करने और दस्तावेजीकरण करने का समर्थन करते हैं खास तौर पर उस स्थिति में जब कोई औपचारिक प्राधिकार मौजूद न हो।

547 वैश्विक भागीदारों के 2016 के ट्रांसलेशन कॉमंस के सर्वे ने सीमित मार्गदर्शन प्रथाएं और अनुवाद और भाषांतरण (T&I) के क्षेत्रों में इसके लाभों के प्रति कम जागरूकता दर्शाई। उत्तरदाताओं ने मार्गदर्शक भागीदार चुनने, व्यावसायिक मान्यता और दृश्यता प्राप्त करने, तीसरे पक्ष का समर्थन, परीक्षण अवधि, वैश्विक रूप से काम करने, क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धा से बचने, व्यावसायिक मार्गदर्शन, भूमिका स्पष्टता, कस्टम प्रोग्राम और विश्वास-निर्माण में मदद प्राप्त करने की अपेक्षा रखी।

ये निर्देश /नियम साझेदारी, समझौतों तथा मार्गदर्शक-प्रशिक्षु संबंध (MMR) में मान्यता और मुआवजे की चुनौतियों को संबोधित करने के लिए एक फ्रेमवर्क प्रदान करके मूलनिवासी भाषाएं अनुवाद और दुभाषिए पेशेवरों के बीच मार्गदर्शन को बढ़ावा देते हैं। हालांकि निर्देश /नियम समग्र हैं किंतु सभी अनुशंसाएँ अनिवार्य नहीं हैं और इन्हें आवश्यकता के अनुसार रूपांतरित किया जाना चाहिए। उपयोगकर्ता इसके क्रियान्वयन के लिए जिम्मेदार हैं; लेखक त्रुटियों के लिए उत्तरदायी नहीं हैं। यह निर्देश ऑनलाइन संसाधनों के सावधानीपूर्वक उपयोग पर जोर देते हुए बदलते हुए तकनीकी परिदृश्य में स्पष्ट, सम्मानपूर्ण, सार्थक सहयोग को बढ़ावा देता है।

निर्देश /नियम को इस प्रकार से तैयार किया गया है कि इन्हें प्रत्येक पेशेवर की भाषा, संस्कृति और समुदाय के अनुकूल बनाया जा सके। स्वतंत्र कार्य और समुदाय आधारित कार्य के लिए निर्देश खास तौर पर मूल्यवान होते हैं। ये निर्देश /नियम साझा मूल्यों और परस्पर सम्मान का आदर करते हुए निर्देश संबंध की शुरुआत करने वाले, इसे मजबूती प्रदान करने वाले या मार्गदर्शन करने वाले किसी भी व्यक्ति की सहायता करते हैं।

यह कंटेंट विभिन्न सहयोगी और शैक्षिक निर्देश कार्यक्रमों, इंटरनेशनल कोच फ़ेडरेशन, यूरोपियन मेंटरिंग एंड कोचिंग काउंसिल और ISO मानकों पर आधारित है जिसका उद्देश्य प्रभावी निर्देश का समर्थन करना है खास तौर पर उन क्षेत्रों में जहां औपचारिक सहयोग की कमी है।

2 इन निर्देशों/नियमों का परिचय

2.1 इन निर्देशों/नियमों का उपयोग करना

मूल-निवासी T&I पेशेवर निर्देश कार्यक्रमों को स्थापित कर सकते हैं खास तौर पर जहां कोई कार्यक्रम मौजूद नहीं है या अनुकूलित दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी जाती है। भागीदारों को ढूंढने, लक्ष्य निर्धारित करने, प्रगति का प्रबंधन करने और समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए व्यावहारिक चरणों का पालन करें। अनुकूलित कार्यक्रमों और नए पीयर-टू-पीयर कोचिंग मॉडल को प्रोत्साहित किया जाता है।

2.2 गुणवत्ता संबंधी आश्वासन

ये निर्देश /नियम PDCA (ISO 9001 पर आधारित प्लान-डू-चेक-ऐक्ट) सिद्धांत लागू करते हैं ताकि स्वतंत्र मार्गदर्शन संबंधों को प्रबंधित करने में व्यक्तियों को मदद मिले। इनमें प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए सुझाव, संदर्भ और टेम्प्लेट शामिल हैं। भागीदारियों की निगरानी करना और समय-सीमा के साथ स्पष्ट, हासिल करने योग्य लक्ष्यों की निगरानी करना महत्वपूर्ण है जैसे उद्योग संबंधी जानकारी बढ़ाना या कौशल बेहतर करना। दोनों पक्षों को सकारात्मक और वचनबद्ध रहना चाहिए। अधिकांश संबंध मूल्य जटिल कौशल सीखकर सहमति और आत्म-विश्वास निर्माण पर निर्भर होते हैं।

3 मार्गदर्शक-प्रशिक्षु संबंध की योजना बनाना

मार्गदर्शन एक गैर-नियोजन संबंध है जो सीखने और पेशेवर विकास पर केंद्रित है। मार्गदर्शक काम या रेफरेंस दिए बिना मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। प्रशिक्षु को T&I का क्षेत्र एक्सप्लोर करने के लिए सुरक्षित स्थान मिलता है। अनुभव से दोनों पक्षों को लाभ होता है और पेशेवर विकास में सहायता मिलती है।

3.1 मार्गदर्शक-प्रशिक्षु संबंध निर्मित करने के कारण

मूल-निवासी अनुवादकों और दुभाषियों के लिए मार्गदर्शन महत्वपूर्ण है क्योंकि औपचारिक कार्यक्रमों में अक्सर व्यावसायिक, नैतिक और प्रोजेक्ट मैनेजमेंट में सांस्कृतिक रूप से उपयोगी, व्यावहारिक कुशलताओं की कमी होती है। अधिकतर मूल-निवासी भाषाओं में मानकीकृत लेखन प्रणालियों और दक्षता जाँचों का अभाव है और यह संभव है कि मूल-निवासी भाषा के अनुवादकों और दुभाषियों के पास विशेष रूप से अनुवाद और भाषांतरण की सीमित औपचारिक शिक्षा या प्रशिक्षण ही हो। इसकी वजह से नए पेशेवर दोहनकारी स्थितियों में कमजोर स्थिति में होते हैं जैसे कि कम भुगतान और अवास्तविक समय सीमाएं। मार्गदर्शन नैतिक कार्यपद्धियों और आत्मविश्वास को बढ़ावा देकर इन कमियों को पूरा करता है। मार्गदर्शक कौशल निखारते हैं, नेटवर्क तैयार करते हैं और अधिक निष्पक्ष इंडस्ट्री को बढ़ावा देते हैं जबकि प्रशिक्षु अनुभव हासिल करते हैं, खतरों से बचते हैं, गुणवत्ता बेहतर करते हैं, विश्वनीयता निर्मित करते हैं और भविष्य के मार्गदर्शक बनते हैं। इससे सहयोग और सांस्कृतिक सत्यनिष्ठा के माध्यम से मूल-निवासी T&I समुदाय को मजबूती मिलती है।

3.2 भागीदार की योग्यता

T&I में मार्गदर्शक एक अनुभवी पेशेवर कर्मी (स्वतंत्र अनुवादक, एजेंसी, कर्मचारी, अध्यापक या संबंधित विषय का विशेषज्ञ होता है चाहे वह किसी भी भाषा युग्म में काम करता हो) जो नए या अनुभवी अनुवादकों और दुभाषियों को CAT साधन, टर्मिनॉलॉजी मैनेजमेंट, मार्केटिंग, कम्युनिकेशन और ब्रांडिंग

जैसे क्षेत्रों में कौशल हासिल करने में मदद करता है। हालांकि, मार्गदर्शन करने के लिए दशकों का अनुभव जरूरी नहीं होता, नए पेशेवर भी साधनों या टेक्नोलॉजी में दूसरे लोगों का मार्गदर्शन कर सकते हैं।

प्रशिक्षु वह व्यक्ति होता है जो करियर शुरू करने के लिए (जैसे हाल में स्नातक होने वाला व्यक्ति या छात्र) या मौजूदा पेशेवर जो विशेषज्ञता हासिल करने के लिए, नए साधनों या प्रक्रियाओं सीखने के लिए, नए बाजार में प्रवेश करने के लिए या तकनीकी ज्ञान प्राप्त करने के लिए मार्गदर्शन चाहता है।

3.3 मार्गदर्शन साझेदारी की स्थापना

मूल-निवासी T&I में मार्गदर्शन संबंधों को मार्गदर्शक और प्रशिक्षु दोनों की जरूरतों के हिसाब से तय किया जाना चाहिए। T&I के क्षेत्र में आगे बढ़ने के इच्छुक मूल निवासी पेशेवरों को मार्गदर्शक खोजने के लिए अपने समुदाय से ही शुरुआत करनी चाहिए। बुजुर्ग लोग, अनुभवी अनुवादक और भाषा को संजोने वाले लोगों द्वारा संस्कृति और भाषा संबंधी गहन जानकारी दी जाती है। भाषा पुनरुद्धार कार्यक्रम, सांस्कृतिक संगठन और T&I एसोसिएशन भाषा के पुनरुद्धार के लिए मार्गदर्शन सुविधा दे सकते हैं या व्यक्तियों को अवसरों से जोड़ सकते हैं। प्रशिक्षुओं को वर्कशॉप और ऑनलाइन फोरम से लाभ मिल सकता है। उन्हें इन नेटवर्क के माध्यम से भी मार्गदर्शन मिल सकते हैं। हालांकि समान भाषा में काम करने वाले मार्गदर्शक सबसे बेहतर होते हैं, लेकिन अन्य भाषाओं से आने वाले मार्गदर्शक भी T&I की व्यापक कार्यपद्धतियों, नैतिकता और करियर विकास में मूल्यवान मार्गदर्शन दे सकते हैं।

3.4 अपेक्षाओं का प्रबंधन और प्रोत्साहन

मार्गदर्शन कार्यक्रमों में स्पष्ट और वास्तविक लक्ष्य होने चाहिए। मार्गदर्शकों को प्रशिक्षुओं की मदद करने के लिए समय और कौशल की जरूरत होती है और प्रशिक्षुओं के लक्ष्य उनकी वर्तमान क्षमताओं से मेल खाने चाहिए। नियमित रूप से छानबीन करना और लक्ष्यों में फेरबदल करना सफलता की कुंजी है। निराशा से बचने के लिए सेशन अच्छी तरह से व्यवस्थित, लचीले, आकर्षक और रचनात्मक प्रतिक्रिया वाले होने चाहिए। दीर्घकालिक लाभों को रेखांकित करने से दोनों पक्षों का मनोबल बना रहता है। प्रोत्साहन में कमी आने पर, लक्ष्यों, फीडबैक, संवाद और प्रगति पर फिर से विचार करें। जरूरत पड़ने पर कोई तीसरा पक्ष भी मुद्दों को सुलझाने में मदद कर सकता है, जिससे गति को फिर से चालू किया जा सके।

3.5 व्यावहारिक व्यवस्थाएँ

मेंटरशिप की शुरुआत में मार्गदर्शक और प्रशिक्षु को मुख्य व्यावहारिक व्यवस्थाओं पर सहमत होना चाहिए:

- अवधि: कुछ सप्ताह, महीने या इससे अधिक, जो भी अवधि दोनों पक्षों को उपयुक्त लगे।
- मीटिंग की फ्रीक्वेंसी: शुरुआत में मासिक से अधिक बार और फिर जैसे-जैसे प्रशिक्षु का आत्मविश्वास बढ़ता जाता है, धीरे-धीरे फ्रीक्वेंसी कम होती जाए।
- फॉर्मेट: व्यक्तिगत, ऑनलाइन या दोनों का मिला-जुला रूप। ऑनलाइन साधनों से आसान संवाद किया जा सकता है और सेशन रिकॉर्डिंग भी की जा सकती है।

उन्हें यह भी तय करना चाहिए कि संवाद कैसे करें जैसे कि कॉल शेड्यूल करना, ईमेल अपडेट, शेयर किए गए दस्तावेज, ग्रुप चैट या फोरम जिनसे कुल मिलाकर सीखने में मदद मिलती है। संवाद के तरीकों पर शुरुआत में ही सहमति बना लेनी चाहिए और इसे निरंतरता में बनाए रखना चाहिए। मार्गदर्शन में समय और मेहनत लगती है इसलिए दोनों पक्षों को संभावित चुनौतियों पर चर्चा करनी चाहिए। अगर मार्गदर्शक

या प्रशिक्षु में से कोई अनुपलब्ध हो जाता है, तो मार्गदर्शन रुक सकता है। अगर मार्गदर्शक अनुपलब्ध हो जाता है, तो सहायक मार्गदर्शक को शामिल करना या पीयर सपोर्ट हासिल करने के विकल्प होते हैं।

मुआवज़े के बारे में खुलकर बात की जानी चाहिए। कुछ मार्गदर्शन बिना भुगतान के होते हैं जबकि कुछ में प्रशिक्षण, काम की समीक्षा या कामों के प्रबंधन के लिए प्रतिफल शामिल हो सकता है। कुछ मामलों में प्रशिक्षु को मार्गदर्शक प्रोजेक्ट में योगदान देने के लिए भुगतान किया जा सकता है या फंडिंग किसी प्रायोजक से आ सकती है। व्यवस्थाएं लचीली होनी
चाहिए और आवश्यकता के अनुसार विकसित होती रहनी चाहिए। समय, संचार और मुआवजे के संबंध में स्पष्ट समझौते दोनों पक्षों के लिए सम्मानजनक, प्रभावी और टिकाऊ मार्गदर्शन सुनिश्चित करने में मदद करते हैं।

3.6 क्षमताओं और कौशलों का मूल्यांकन करना

मार्गदर्शन कार्यक्रम शुरू करने से पहले मार्गदर्शक और प्रशिक्षु को स्व-मूल्यांकन करना चाहिए और जानकारी का आदान-प्रदान करना चाहिए ताकि सही उपयुक्तता सुनिश्चित हो और फोकस क्षेत्रों की पहचान हो सके। मार्गदर्शक को अपने कौशल, अनुभव, तकनीकी क्षमताओं, मार्गदर्शन की पृष्ठभूमि, व्यक्तित्व, कार्य नैतिकता, उपलब्धता और पढ़ाने की शैली की रूपरेखा प्रस्तुत करनी चाहिए। प्रशिक्षु को अपना ऐसा बायोडेटा शेयर करना चाहिए जिसमें अध्ययन, कार्य अनुभव, तकनीकी कौशल, संबद्धता, पूर्व मार्गदर्शन, व्यक्तित्व, कार्य नैतिकता, उपलब्धता और सीखने की प्राथमिकताएं शामिल हों। मार्गदर्शक प्रशिक्षु का मूल्यांकन चर्चाओं, टेस्ट या वर्क सैंपल के माध्यम से बेहतरी की जरूरतों की पहचान करने और लक्ष्यों की ओर मार्गदर्शन करने की उनकी क्षमता की पुष्टि करने के लिए कर सकते हैं, ताकि मार्गदर्शन जारी रखने में पारस्परिक विश्वास सुनिश्चित हो।

3.7 मार्गदर्शन टीम

प्रशिक्षु की जरूरतों और मार्गदर्शक की उपलब्धता के आधार पर एक मार्गदर्शन संबंध में एक या कई मार्गदर्शक शामिल हो सकते हैं। अगर एक अनुभवी मार्गदर्शक सभी प्रासंगिक विषयों को कवर करने में सक्षम होता है, तो वह स्वयं प्रशिक्षु का मार्गदर्शन कर सकता है। हालांकि, अगर मार्गदर्शक के सामने जिम्मेदारी निभाने से पीछे पड़ने की जरूरत पड़ती है या उसके पास कुछ क्षेत्रों में विशेषज्ञता की कमी होती है, तो कोई सहकर्मी खास कामों जैसे सीखने की सामग्री संशोधित करने या शेयर करने में मदद के लिए शामिल हो सकता है। जब कई मार्गदर्शक शामिल हों, तो प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका और शेड्यूल को स्पष्ट रूप से निर्धारित करना महत्वपूर्ण है ताकि भ्रम से बचा जा सके। हो सकता है कि कुछ लोग एक-दूसरे के साथ मिलजुलकर काम करें जबकि हो सकता है कि अन्य मार्गदर्शक बारी-बारी से प्रशिक्षु का मार्गदर्शन करें। मुख्य बात है कि खुले तौर पर संवाद किया जाए और सावधानीपूर्वक योजना बनाई जाए ताकि कार्यक्रम लक्ष्य पर केंद्रित और प्रबंधन करने योग्य बना रहे।

इसी तरह, कोई मार्गदर्शक एक समय में एक से अधिक प्रशिक्षु के साथ काम करने का विकल्प चुन सकता है। ऐसा होने पर प्रशिक्षु सहयोग कर सकते हैं और शब्दावलियों, स्टाइल गाइड या प्रोजेक्ट टेम्प्लेट जैसे संसाधनों को शेयर कर सकते हैं। सुपरविज़न में एक साथ काम करते हुए प्रशिक्षु सामग्री सह-निर्मित कर सकते हैं या प्रोजेक्ट भूमिकाएं आपस में बांट सकते हैं उदाहरण के लिए, एक प्रशिक्षु अनुवाद करे, दूसरा प्रशिक्षु संशोधन करे और तीसरा फॉर्मेटिंग का काम करें। ग्रुप प्रोजेक्ट से टीमवर्क की भावना पैदा होती है साथ ही ये वास्तविक दुनिया के अनुवाद और भाषांतरण वर्कफ्लो को भी दर्शाते हैं।

सहयोग का समर्थन करने के लिए, एक मार्गदर्शक एक निजी स्थान जैसे ऑनलाइन फोरम बना सकता है जहां प्रशिक्षु विचारों का आदान-प्रदान कर सकें, प्रश्न पूछ सकें और अपने मार्गदर्शन अनुभवों को शेयर

कर सकें। यह स्थान उपयोगी सामग्री के लिए एक 'शेयर्ड हब' के रूप में भी काम कर सकता है। अच्छे संगठन और स्पष्ट मार्गदर्शन की मदद से, मार्गदर्शन टीम चाहे यह बड़ी टीम हो या छोटी टीम, मूलनिवासी भाषा पेशेवरों को बढ़ने और फलने-फूलने के लिए एक समृद्ध, सहायक वातावरण प्रदान कर सकते हैं।

3.8 मार्गदर्शकों और प्रशिक्षुओं के बीच तालमेल

एक सफल मार्गदर्शन संबंध के लिए साझा लक्ष्य, स्पष्ट संवाद और तय भूमिकाएं और सीमाएं आवश्यक हैं, जिसमें मार्गदर्शक मार्गदर्शन करते हैं और प्रशिक्षु इनका पालन करते हैं। विनम्रता और ईमानदारी से टकराव से बचने में मदद मिलती है। उपलब्धियों की पहचान करने से टीमवर्क को प्रोत्साहन मिल सकता है।

3.8.1 टकरावों से बचना

मार्गदर्शन में टकराव अस्पष्ट भूमिकाओं, गलत संवाद, प्रशिक्षुओं द्वारा प्रश्न पूछने में संकोच करने, बेमेल अपेक्षाओं और परस्पर विरोधी विचारों से पैदा हो सकते हैं। इनसे बचने के लिए, मार्गदर्शक और प्रशिक्षु दोनों को कार्यक्रम की शुरुआत में अपेक्षाओं और जिम्मेदारियों पर खुलकर चर्चा करनी चाहिए, सहमति वाली बातों का दस्तावेजीकरण करना चाहिए, सक्रिय संवाद बनाए रखना चाहिए और प्रश्नों के लिए खास समय निर्धारित करना चाहिए। प्रशिक्षु को अपनी क्षमताओं के बारे में ईमानदार होना चाहिए और मार्गदर्शक को अपनी सीमाओं को स्वीकार करना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर वैकल्पिक संसाधनों का सुझाव देना चाहिए। जरूरतों और अपेक्षाओं के बारे में खुली और ईमानदार बातचीत के माध्यम से संभावित टकरावों से बचने के लिए काम करना एक सकारात्मक मार्गदर्शन अनुभव के लिए महत्वपूर्ण है।

3.8.2 प्रतिस्पर्धा

मार्गदर्शन में प्रतिस्पर्धा का अर्थ है मार्गदर्शकों और प्रशिक्षुओं के बीच संभावित प्रतिद्वंद्विता, जहां प्रशिक्षु जो सीखते हैं उसका उपयोग मार्गदर्शकों से प्रतिस्पर्धा करने के लिए कर सकते हैं या मार्गदर्शक प्रशिक्षुओं के काम का उपयोग अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए कर सकते हैं। छोटे समुदायों में यह प्रतिस्पर्धा विशेष रूप से टालना कठिन हो सकती है, क्योंकि रिश्ते और क्लाइंट बेस अक्सर साझा और परस्पर जुड़े हुए होते हैं। इससे बचाव के लिए, मार्गदर्शक और प्रशिक्षु एक गैर-प्रतिस्पर्धा समझौते पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। यह अनुबंध सुनिश्चित करता है कि कोई भी पक्ष संवेदनशील व्यावसायिक जानकारी, जैसे क्लाइंट लिस्ट या ट्रेड सीक्रेट का उपयोग करके सीधे प्रतिस्पर्धा नहीं करेगा। इसे लागू करने योग्य बनाने के लिए इसमें समय और भूगोल संबंधी सीमाएं शामिल हो सकती हैं।

हालांकि, गैर-प्रतिस्पर्धा समझौते प्रशिक्षुओं के भविष्य के काम के अवसरों को सीमित कर सकते हैं। प्रशिक्षुओं के लिए इस पर ध्यान देना बेहद ज़रूरी है कि वे शर्तों को और इसे समझें कि समझौता उनके करियर को कैसे प्रभावित कर सकता है। ऐसे मामलों में जहां गैर-प्रतिस्पर्धा उपयुक्त नहीं है, संवेदनशील सामग्री जैसे टेक्स्ट, शब्दावलियां और ग्राहक जानकारी की सुरक्षा के लिए गैर-प्रकटीकरण समझौता (NDA) का उपयोग किया जा सकता है। यह दृष्टिकोण विश्वास बनाए रखने और मार्गदर्शक-प्रशिक्षु के बीच व्यावसायिक संबंध की अखंडता की रक्षा करने में मदद करता है, विशेष रूप से छोटे समुदायों में जहां प्रतिस्पर्धा से बचना कठिन होता है।

4 प्रमुख विषय-क्षेत्र

4.1 अनुवादक की भूमिका

अनुवाद लिखित कंटेंट को लक्ष्य भाषा में रूपातंरित करने पर केंद्रित होता है।

4.1.1 अनुवाद संबंधी क्लाइंट

अनुवादक संस्थागत ग्राहकों (सरकारों, संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ), निजी कंपनियों (शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, कानूनी क्षेत्रों में स्थानीय/वैश्विक व्यवसाय), गैर-सरकारी संगठनों/गैर-लाभकारी संस्थाओं (उदाहरण के लिए, रेड क्रॉस, ग्रीनपीस), और व्यक्तियों को व्यक्तिगत दस्तावेजों जैसे बायोडेटा या पत्र की आवश्यकता वाले लोगों की सेवा करते हैं। मूल-निवासी अनुवादक अक्सर अपने समुदायों के भीतर कानूनी, शैक्षिक और चिकित्सा दस्तावेजों का अनुवाद करते हैं।

4.1.2 अनुवाद कार्य

4.1.2.1 विशेषज्ञता के क्षेत्र

मुख्य अनुवाद क्षेत्रों में सामान्य, साहित्यिक, तकनीकी, वैज्ञानिक, चिकित्सा, कानूनी, व्यावसायिक, फाइनेंस, मार्केटिंग, पर्यटन, खेल और धर्म शामिल हैं। मूल-निवासी अनुवादक आमतौर पर कानूनी, चिकित्सा, शैक्षिक और सामान्य दस्तावेजों के साथ काम करते हैं।

4.1.2.2 परियोजना की श्रेणियां

ऐसा हो सकता है कि मूल-निवासी अनुवादक भाषा के संरक्षण, सांस्कृतिक परियोजनाओं या समुदाय की जरूरतों के समर्थन में काम करें। विशेषज्ञताएं स्थानीय संदर्भों को दर्शाती हैं और इनमें बुजुर्ग लोग या सांस्कृतिक विशेषज्ञ शामिल हो सकते हैं। प्रोजेक्ट के लिए अक्सर सटीकता और सांस्कृतिक सम्मान सुनिश्चित करने के लिए प्रशिक्षण और सहयोग की आवश्यकता होती है। सामान्य प्रोजेक्ट में मौखिक इतिहास का दस्तावेजीकरण, सॉफ्टवेयर और वेबसाइटों को अपने अनुकूल बनाना और कहानियों, साक्षात्कारों और शैक्षिक सामग्री जैसे मल्टीमीडिया का स्थानीयकरण यानी लोकलाइज़ करना शामिल है। यह आपातकालीन जानकारी, स्वास्थ्य और नियामक और अन्य जानकारी जैसे बाहरी कंटेंट को आदिवासी/मूलनिवास समुदाय तक लाने के लिए भी ज़रूरी हो सकता है।

4.1.2.3 भाषायी कार्य

अनुवादक अक्सर ऐसे टास्क भी हैंडल करते हैं जो अनुवाद से परे होते हैं जिनमें मार्गदर्शक मदद कर सकते हैं। संशोधन के काम में सोर्स टेक्स्ट के लिए सटीकता, शैली और त्रुटियों की जांच करता है। रिव्यू में टार्गेट टेक्स्ट की प्रवाहशीलता और उपयुक्तता पर ध्यान दिया जाता है। बची हुई गलतियों के लिए प्रूफरीडिंग अंतिम जांच होती है। अन्य कार्यों में सबटाइटलिंग, वॉइस-ओवर, ट्रांसक्रिएशन, टर्मिनोलॉजी रिसर्च, CAT साधनों का उपयोग, स्थानीयकरण, क्वालिटी एश्योरेंस (QA) और मशीन ट्रांसलेशन का पोस्ट-एडिटिंग शामिल हैं।

4.1.3 अनुवादक कौशल

एक कुशल अनुवादक दोनों भाषाओं में धाराप्रवाह होता है, स्रोत और लक्षित दोनों संस्कृतियों को समझता है और उसका लेखन कौशल प्रभावी होता है। महत्वाकांक्षी अनुवादकों को इक्विलेंस और पैरा-फ्रेज़िंग जैसी तकनीकों में निपुणता हासिल करनी चाहिए, सांस्कृतिक बारीकियों को समझना चाहिए, रचनात्मकता लागू करनी चाहिए और सटीक शब्दावली और जानकारी को रिसर्च करना चाहिए।

4.1.4 अनुवादक के साधन

आधुनिक अनुवाद डिजिटल साधनों पर निर्भर करता है जो गुणवत्ता का प्रबंधन और सुधार करते हैं। मार्गदर्शन ज्ञान के आदान-प्रदान का अवसर है जैसे वरिष्ठ पेशेवर अनुवादक अपना अनुभव साझा करते हैं, जबकि नए अनुवादक उपयोगी टेक्नोलॉजी से परिचय कराते हैं। मुख्य साधनों में CAT (कंप्यूटर-असिस्टेड ट्रांसलेशन) साधन शामिल हैं, जो टेक्स्ट के सेगमेंट बनाते हैं, अनुवाद को स्टोर करते हैं और संगतता बनाए रखते हैं। हालांकि CAT साधनों को अक्सर बड़े बायलिंगुअल डेटासेट की आवश्यकता होती है और हो सकता है कि वे मूलनिवासी भाषाओं का पूर्ण समर्थन न करें, लेकिन बुनियादी चीजें सीखना अभी भी उपयोगी है खास तौर पर बहुभाषी प्रोजेक्ट के लिए। CAT साधन प्रोजेक्ट सेटअप, शब्दावली प्रबंधन, अनुवाद मेमोरी, और फाइल समीक्षा जैसे फीचर उपलब्ध कराते हैं। वे पूरी तरह से उपयुक्त नहीं हैं; फॉर्मेटिंग से जुड़ी समस्याएं और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील कंटेंट के लिए मानवीय निर्णय की आवश्यकता हो सकती है। अनुवादकों को हमेशा टेक्स्ट की स्पष्टता, अर्थ और सांस्कृतिक सटीकता को प्राथमिकता देनी चाहिए।

शब्दावली साधन (उदाहरण के लिए, दविभाषी शब्दावलियां, ऑनलाइन शब्दकोश और इनके संग्रह) अनुवादक को संदर्भ में भाषा समझने में मदद करते हैं। मार्गदर्शक प्रशिक्षुओं को व्यक्तिगत शब्दावलियां और संदर्भ डेटाबेस बनाने का तरीका सिखा सकते हैं, जो विशेष रूप से कम संसाधनों वाली मूलनिवासी भाषाओं के लिए मददगार होते हैं। कुछ अनुवादकों को फॉर्मेटिंग, मल्टीमीडिया मैनेज करने या वेबसाइटों के साथ काम करने के लिए अन्य सॉफ्टवेयर सीखने से भी फायदा हो सकता है। लक्ष्य यह नहीं है कि हर साधन में निपुणता हासिल की जाए बल्कि उन साधन का सहजता से उपयोग करने योग्य बना जाए जो गुणवत्ता, दक्षता और व्यावसायिकता का समर्थन करते हैं।

4.2 दुभाषिये की भूमिका

भाषांतरण यानी इंटरप्रेटेशन वास्तविक समय में बोले जाने वाले कंटेंट को लक्षित भाषा में मौखिक रूप से परिवर्तित करने पर केंद्रित होता है। परिस्थितियों के लिए ऑडियो उपकरण और साउंड-इंसुलेटेड बूथों की आवश्यकता हो सकती है। इस सेक्शन में भाषांतरण के तरीके, मुख्य कौशल, कार्य स्थितियां, तैयारी रणनीतियां, उपकरण और मार्गदर्शन सलाह को कवर किया जाता है।

4.2.1 भाषांतरण के तरीके

भाषांतरण के तीन तरीके हैं: समकालिक/फुसफुसाहट, क्रमिक और दृष्टि अनुवाद।

- समकालिक भाषांतरण में सुनते और उसी समय व्याख्या करना शामिल होता है, दूसरे शब्दों में स्रोत सामग्री को वास्तविक समय में सुनते हुए लक्षित भाषा में बोला जाता है। यह अक्सर ऐसी स्थितियों में उपयोग किया जाता है जहां भाषण के प्रवाह को रोकना उपयुक्त या संभव नहीं होता, उदाहरण के लिए अस्पतालों, सामाजिक कार्यक्रमों और स्कूलों में। स्पष्टीकरण के सीमित अवसरों के कारण यह विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण होता है।

- फुसफुसाहट भाषांतरण यानी व्हिस्पर्ड इंटरप्रेटिंग समकालिक भाषांतरण के समान है, लेकिन इसे बिना उपकरण के और श्रोता के कान में फुसफुसाकर किया जाता है। इसे आम तौर पर समुदाय, व्यवसाय या स्वास्थ्य देखभाल वाले माहौल में उपयोग किया जाता है। पृष्ठभूमि का शोर इसे चुनौतीपूर्ण बना सकता है। समकालिक और फुसफुसाहट दोनों भाषांतरणों को थकान कम करने के लिए बारी-बारी से एक साथ यानी पेयर में किया जाना सबसे अच्छा विकल्प है।

- क्रमिक भाषांतरण यानी कॉन्सेक्यूटिव इंटरप्रेटिंग मूल-निवासी दुभाषियों के बीच सबसे आम तौर पर होता है। इसमें सुनना और फिर वक्ता के रुकने के बाद व्याख्या करना शामिल है। इसका

बातचीत, साक्षात्कार और अदालत या चिकित्सा संबंधी मुलाकातों जैसे औपचारिक माहौल में उपयोग किया जाता है। यह तरीका याद करने, नोट लेने के तरीके और सहजता से बारी-बारी भाषांतरण करने पर निर्भर करता है। स्पष्टीकरण संभव हो भी सकता है और नहीं भी।

- दृष्टि अनुवाद में कोई दस्तावेज पढ़ना और उसे जोर से पढ़ते हुए अनुवाद करना शामिल है। इसका छोटे टेक्स्ट जैसे चिकित्सा फॉर्म या स्कूल रिकॉर्ड के लिए उपयोग किया जाता है। चूंकि मूलनिवासी भाषाओं में सभी शब्द मौजूद नहीं होते, दुभाषिया पहले प्रदाता को दस्तावेज समझा सकता है, फिर इसकी व्याख्या कर सकता है।

मार्गदर्शन से सभी तरीकों में कुशलता निर्मित करने में मदद मिलती है। मार्गदर्शक और प्रशिक्षु मेमोरी एक्सरसाइज़, रिकॉर्डिंग और ड्रिल का उपयोग करके व्यक्तिगत प्रशिक्षण योजनाएं बना सकते हैं। रिकॉर्डिंग की समीक्षा, विचार-विमर्श के विश्लेषण और पेशेवर दुभाषियों को ध्यान से देखने से महत्वपूर्ण गहरी जानकारी मिलती है। मार्गदर्शक को फीडबैक देना चाहिए, सर्वोत्तम प्रथाओं को शेयर करना चाहिए और प्रशिक्षुओं को अलग-अलग संदर्भों और समुदाय की जरूरतों के अनुकूल बनने में मदद करनी चाहिए।

4.2.2 भाषांतरण की स्थितियां

हालांकि भाषांतरण अक्सर हाई-प्रोफाइल घटनाओं से जुड़ा होता है, अधिकांश मूल-निवासी दुभाषिया समुदाय स्थितियों जैसे अस्पतालों, स्कूलों, सामाजिक कार्यक्रमों और अदालतों में काम करते हैं। विषय अक्सर चिकित्सा या कानूनी होते हैं और भाषांतरण के तरीके स्थिति के अनुसार अलग-अलग हो सकते हैं। समुदाय दुभाषी आमतौर पर ग्राहकों और प्रदाताओं के साथ सीधे काम करते हैं और अक्सर सटीकता के लिए सवाल पूछने का लचीला रवैया रखते हैं।

कॉन्फ्रेंस भाषांतरण जो आमतौर पर औपचारिक इवेंट में होता है, इसके लिए विशेष उपकरण और समकालिक भाषांतरण के उन्नत कौशल की आवश्यकता होती है। इस काम के लिए अक्सर सर्टिफिकेशन और दबाव में काम करने की क्षमता की मांग की जाती है। हालांकि कुछ मूल-निवासी दुभाषिये कॉन्फ्रेंस इंटरप्रेटिंग का काम जारी रख सकते हैं लेकिन सामुदायिक भाषांतरण सबसे सामान्य और महत्वपूर्ण काम बना रहता है।

मार्गदर्शन में अलग-अलग स्थितियों में पेशेवर दुभाषियों को शैडो करना यानी साथ रहकर सिखाते हुए शामिल किया जाना चाहिए चाहे मार्गदर्शक स्वयं भाषांतरण न करे। ध्यान से देखना और लॉग रखने से प्रशिक्षुओं को वातावरणों पर चिंतन करने, प्राथमिकताओं की पहचान करने और कोर्ट या हेल्थकेयर जैसी खास स्थितियों में जरूरी कौशल को समझने में मदद मिलती है।

4.2.3 भाषांतरण कौशल

दुभाषियों के पास भाषा, तकनीक और इन इंटर-पर्सनल स्किल का मिला-जुला रूप होना चाहिए: दो भाषाओं में धाराप्रवाह बोलने की क्षमता, याद रखने की क्षमता, सुनने और पढ़ने की समझ और दबाव में शांत रहने की क्षमता। हर तरीके के लिए खास तकनीकें जरूरी होती हैं, जैसे नोट लेना या तेज मेंटल प्रोसेसिंग। अंतर्वैयक्तिक गुण जैसे अनुकूलनशीलता, सहानुभूति और सांस्कृतिक संवेदनशीलता भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं—खासकर उन मूल-निवासी दुभाषियों के लिए जो समुदाय वाली स्थितियों में काम करते हैं। सभी सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में भरोसा पैदा करना और सम्मान प्रकट करना अनिवार्य है।

मार्गदर्शक इन कौशलों को विकसित करने में संसाधन सुझाकर, फीडबैक देकर और तकनीकी और पारस्परिक विकास का मार्गदर्शन करके मदद करते हैं। जहां उपलब्ध हो, वे प्रशिक्षुओं को सर्टिफ़िकेशन या औपचारिक प्रशिक्षण तलाशने में सहायता कर सकते हैं। प्रशिक्षुओं को साथियों और पेशेवरों से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित करना भी व्यावहारिक ज्ञान और आत्मविश्वास बढ़ाता है।

4.2.4 असाइनमेंट की तैयारी

चूंकि भाषांतरण रीयल टाइम में करना होता है, इसलिए तैयारी करना अनिवार्य है। दुभाषियों को विषय, स्थिति और प्रतिभागियों के बारे में रिसर्च करनी चाहिए, उपलब्ध दस्तावेजों की समीक्षा करनी चाहिए और शब्दावली या लैपटॉप जैसे साधन अपने साथ लाने चाहिए। सेशन के दौरान वे विज़ुअल एड्स यानी दिखाई देने वाली सहायक सामग्री का उपयोग कर सकते हैं या जरूरत पड़ने पर स्पष्टीकरण मांग सकते हैं। निरंतर भाषा अभ्यास और वर्तमान घटनाओं से अवगत रहना दीर्घकालिक विकास में सहायक होता है। तैयारी प्रशिक्षु के कौशलों और पसंदीदा स्थितियों के अनुसार होनी चाहिए। मार्गदर्शक विशेषज्ञता के क्षेत्र सुझा सकते हैं, संसाधनों को सुझा सकते हैं और आत्मविश्वास के साथ असाइनमेंट हैंडल करने के टिप्स दे सकते हैं।

4.2.5 उपकरण

उपकरणों का उपयोग अलग-अलग होता है। कम्युनिटी दुभाषिए कानूनी संदर्भों में वायरलेस सिस्टम या रिकॉर्डिंग साधनों का उपयोग कर सकते हैं। दुभाषियों को उपकरण के उपयोग के बारे में बता देना चाहिए और इसकी सहमति लेनी चाहिए। क्रमिक भाषांतरण के लिए आमतौर पर सिर्फ नोटपैड की जरूरत होती है, हालांकि ऑडियो उपकरण की भी आवश्यकता हो सकती है। दुभाषियों को यह पता होना चाहिए कि उनकी उपस्थिति और साधन सेशन को कैसे प्रभावित करते हैं और उन्हें विभिन्न तकनीकों के साथ काम करने या जरूरत पड़ने पर बाहर निकलने के लिए तैयार रहना चाहिए। मार्गदर्शक प्रशिक्षुओं को उपकरण के उपयोग पर मार्गदर्शन कर सकते हैं, उसका उद्देश्य समझा सकते हैं, मानकों पर रिसर्च कर सकते हैं और व्यावहारिक अनुभव हासिल करने में मदद कर सकते हैं। पीयर लर्निंग भी आत्मविश्वास और दक्षता बढ़ाने में सहायता करती है।

4.3 क्लाइंट और एजेंसी कम्युनिकेशन

मार्गदर्शकों को प्रशिक्षुओं को अलग-अलग तरह के क्लाइंट जैसे व्यक्ति, संगठन और एजेंसियों को समझने में मदद करनी चाहिए। हर क्लाइंट की पृष्ठभूमि, अनुभव और संचार शैली अलग होती है, इसलिए दुभाषियों को इनके मुताबिक खुद को ढालना सीखना चाहिए।

एजेंसियों के साथ काम करना अंतिम क्लाइंट्स के साथ काम करने से अलग होता है। एजेंसियों में आमतौर पर प्रोजेक्ट मैनेजर होते हैं जो अनुवाद प्रक्रियाओं, साधनों और क्वालिटी कंट्रोल से परिचित होते हैं, जबकि एंड-क्लाइंट्स को मार्गदर्शन की जरूरत पड़ सकती है। दुभाषियों को स्पष्ट रूप से संवाद करना चाहिए और सफल प्रोजेक्ट के लिए जरूरी बातें समझानी चाहिए जैसे सामग्री, योजनाबद्ध चरण (तैयारी, अनुवाद, संशोधन), संभावित डिलीवरेबल्स (जैसे फाइल फॉर्मेट) और समय-सीमाएं। इससे विश्वास बनता है और दुभाषिया-क्लाइंट संबंध मजबूत होता है।

4.4 काम के सबसे बेहतर तौर-तरीके

मूल-निवासी दुभाषिए जो फ्रीलांस करते हैं, वे मूल रूप से छोटे बिजनेस के मालिक होते हैं। प्रशिक्षुओं को अपनी कानूनी, वित्तीय और व्यावहारिक जिम्मेदारियां समझनी चाहिए। इसमें स्थानीय कानूनों की जानकारी, सेवाओं का पंजीकरण, टैक्स आईडी प्राप्त करना और टैक्स पेशेवरों से परामर्श करना शामिल है।

किसी भी संभावित घटना को कवर करने वाली अच्छी इंश्योरेंस पॉलिसी होना महत्वपूर्ण है क्योंकि गलत अनुवाद या वर्तनी की गलती भी क्लाइंट्स को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

मार्केटिंग फ्रीलांस प्रैक्टिस बढ़ाने की कुंजी है। प्रशिक्षु स्थानीय इवेंट्स में नेटवर्किंग कर सकते हैं, सोशल मीडिया का उपयोग कर सकते हैं, प्रोफेशनल ग्रुप्स से जुड़ सकते हैं या आसान सी वेबसाइट बना सकते हैं। बिजनेस कार्ड, मेलिंग लिस्ट्स और मौखिक प्रचार भी विज़िबिलिटी बढ़ाने में मदद करते हैं। अलग-अलग क्लाइंट्स के साथ काम करना जानना और स्पष्ट तथा व्यावसायिक तरीके से संवाद करना जरूरी है।

प्रोजेक्ट मैनेजमेंट कौशल होने पर फ्रीलांस में सफलता हासिल करने में मदद मिलती है। प्रशिक्षुओं को अनुरोधों का मूल्यांकन करना, कोटेशन यानी रेट देना, समय-सीमाओं पर सहमत होना और कई असाइनमेंट्स को मैनेज करना सीखना चाहिए। सही रेट तय करना महत्वपूर्ण है और यह जॉब की जटिलता, फॉर्मेट, क्लाइंट प्रकार और अनुभव को दर्शाने वाला होना चाहिए। प्राइसिंग गाइड बनाना, लॉयल्टी डिस्काउंट देना और रश जॉब्स के लिए उचित फ़ीस लेना उपयोगी रणनीतियां हैं।

प्रशिक्षुओं को शेड्यूलिंग, इनवॉइसिंग और बुककीपिंग के लिए टास्क मैनेजमेंट साधनों का उपयोग भी सीखना चाहिए। भुगतान के तरीकों और टैक्स खास तौर से अंतरराष्ट्रीय काम के लिए समझना महत्वपूर्ण है। देर से भुगतान के मामलों में दुभाषियों को रिकॉर्ड रखने चाहिए और स्पष्ट रूप से संवाद करना चाहिए। कानूनी कार्रवाई अंतिम उपाय है क्योंकि इसमें लागत और समय लगता है। मजबूत बिजनेस कौशल दुभाषियों को व्यावसायिकता, आत्मविश्वास और वित्तीय स्थिरता के साथ बढ़ने में मदद करते हैं।

4.5 पेशेवर मूल्य

अनुवाद और भाषांतरण में एसोसिएशन और विनियमों द्वारा निर्देशित व्यावसायिक मूल्य सटीकता और निष्पक्षता पर जोर देते हैं, जैसा कि नैतिक संहिता (अखंडता, व्यावसायिकता, गोपनीयता) और व्यावसायिक मानकों (अनुबंध, शर्तें, भुगतान) में दिखाई देता है। चिकित्सा और अदालती स्थितियों सहित सार्वजनिक सेवा और समुदाय भाषांतरण में भी इन मूल्यों को प्राथमिकता दी जाती है। अन्य प्रमुख मूल्यों में गोपनीयता, योग्यताओं को सटीक तरीके से दर्शाना और निरंतर व्यावसायिक विकास शामिल हैं। प्रशिक्षुओं को प्रासंगिक नैतिक संहिताएं तलाशनी चाहिए और महत्वपूर्ण मुद्दों जैसे पक्षपोषण यानी एडवोकेसी और सर्टिफिकेशन (भाषांतरण के लिए) और सर्टिफिकेशन और भुगतान (अनुवाद के लिए) पर चर्चा करनी चाहिए। मार्गदर्शकों द्वारा नैतिक मार्गदर्शन और नेटवर्किंग के लिए प्रोफेशनल फोरम में भागीदारी करने और एसोसिएशनों से जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

4.6 अवसरों का विस्तार

अपनी सेवाओं का विस्तार करने या क्लाइंट की जरूरतों को पूरा करने के लिए, पेशेवर मूल-निवासी T&I पेशेवर अतिरिक्त कार्यों में मार्गदर्शन से लाभान्वित हो सकते हैं। इनमें भाषा संबंधी कार्य जैसे द्विभाषी शब्दावली बनाना, स्टाइल गाइड या मशीन अनुवाद की पोस्ट-एडिटिंग शामिल है, जिसके लिए भाषा और तकनीकी दोनों तरह के कौशलों की जरूरत होती है। प्रशिक्षु लिंग्विस्टिक क्वालिटी असेसमेंट (LQA) और लिंग्विस्टिक साइन-ऑफ (LSO) भी एक्सप्लोर कर सकते हैं।

तकनीकी पक्ष पर, प्रशिक्षुओं को डेस्कटॉप पब्लिशिंग (DTP), कंपाइलेशन, टेस्टिंग, डिबगिंग और क्वालिटी अश्योरेंस (QA) से परिचित कराया जा सकता है। इन क्षेत्रों में अनुभव हासिल करना नए अवसर खोलता है, खासकर उन लोगों के लिए जो व्यापक भाषा समर्थन की जरूरत वाले क्लाइंट्स के साथ काम करते हैं।

5 क्रियान्वयन और परिचालन

5.1 मार्गदर्शन संबंधी संसाधन

मार्गदर्शक और प्रशिक्षु को मिलकर ऐसी सामग्री चुननी और इसे अपने अनुकूल बनाना चाहिए जो प्रशिक्षु के लक्ष्यों और लैंग्वेज पेयर से मेल खाती हो। साथ ही इसमें मेंटरशिप के आगे बढ़ने पर इन संसाधनों को एडजस्ट करने का लचीलापन भी होना चाहिए।

अनुवाद के लिए, सामग्री से प्रशिक्षु को मुख्य कौशलों जैसे टेक्स्ट टाइप और संदर्भ की पहचान करने, व्याकरण और शब्दावली का विश्लेषण करने और अर्थ, टोन और स्टाइल को सटीक रूप से व्यक्त करना सिखाने में मदद करने वाला होना चाहिए। प्रैक्टिस टेक्स्ट में जन्म प्रमाण-पत्र, डेटाशीट, समाचार पत्र के आर्टिकल, आधिकारिक पत्र या दस्तावेज, साहित्यिक अंश, या स्वास्थ्य, शिक्षा, कानून या सांस्कृतिक संरक्षण जैसे क्षेत्रों के क्षेत्र-विशेष आधारित दस्तावेज जैसी वास्तविक या अनुकूलित सामग्री शामिल हो सकती है। मूल-निवासी संदर्भों में निहित सामग्री जैसे मौखिक इतिहास, पारंपरिक कहानियां या समुदाय के मूल्यों को दर्शाने वाले दस्तावेज शामिल करना महत्वपूर्ण है, ताकि पूरे समय सांस्कृतिक अखंडता और सटीकता बनी रहे।

भाषांतरण के लिए, प्रशिक्षुओं को ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, फिल्मों, रेडियो या लाइव इवेंट्स से भाषणों या ऑडियो सामग्री का उपयोग करके व्हिस्पर्ड यानी फुसफुसाहट, कॉन्सेक्यूटिव यानी क्रमिक और सिम्लटेनियस यानी समकालिक तकनीकों का अभ्यास करना चाहिए। यूरोपीयन कमीशन का स्पीच रिपॉजिटरी और मुफ्त आर्काइव जैसे संसाधन उपयोगी हो सकते हैं, साथ ही समुदाय आधारित सामग्री जैसे मीटिंग, समारोह या कहानी सुनाने के सेशन की रिकॉर्डिंग भी अच्छे विकल्प हैं। जहां संभव हो, प्रशिक्षु अनुभवी दुभाषियों का अवलोकन करके भी लाभान्वित हो सकते हैं।

सभी संसाधन प्रासंगिक, सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त और प्रशिक्षु के सीखने के मार्ग का समर्थन करने वाले होने चाहिए, खासकर मूल-निवासी भाषा कार्य में शामिल अद्वितीय भाषाई और सांस्कृतिक जिम्मेदारियों को ध्यान में रखते हुए।

5.1.1 प्रशासनिक और व्यावसायिक तौर-तरीकों से जुड़े संसाधन

प्रशासनिक और व्यावसायिक पक्ष को समझना महत्वपूर्ण है: कानूनी बाध्यताएं, बुककीपिंग (मैनुअल, टेम्प्लेट, कोर्स या मार्गदर्शक द्वारा दी गई सामग्री का उपयोग करके) और एजेंसियों या क्लाइंट के साथ अनुबंधों को समझना शामिल है, जिसमें सीमाएं, नीतियां और कानून शामिल हैं। प्रशिक्षुओं को जॉब संबंधी सहायता के लिए ट्रेड एसोसिएशन का उपयोग करना भी सीखना चाहिए और सेल्फ-प्रमोशन और क्लाइंट हासिल करने के लिए मार्गदर्शकों की मार्केटिंग इनसाइट से लाभ उठाना चाहिए।

5.1.2 सॉफ्टवेयर साधन

अनुवादकों और दुभाषियों को डिजिटल साधन सीखने चाहिए जो व्यावसायिक कार्य का समर्थन करते हैं। अनुवादक CAT साधन (मुफ्त और भुगतान सहित) और टर्मिनॉलॉजी, ट्रांसलेशन मेमोरी और प्रोजेक्ट ट्रैकिंग के लिए क्लाउड या डेस्कटॉप सॉफ्टवेयर का उपयोग करते हैं। दुभाषी शब्दावली, दस्तावेज प्रबंधन और बूथ कार्य के लिए साधनों का उपयोग करते हैं। शब्दावली का निर्माण और प्रबंधन आवश्यक है, खासकर भाषांतरण या तकनीकी शब्दों के लिए। शब्दावलियां डेटाबेस या सॉफ्टवेयर के माध्यम से व्यवस्थित और सुलभ होनी चाहिए। स्टाइल गाइड से स्थिरता (कंसिस्टेंसी) सुनिश्चित होती है चाहे वह

क्लाइंट-केंद्रित हो या उद्योग आधारित। मूल-निवासी कार्य के लिए, सॉफ्टवेयर को स्थानीय भाषाओं, मौखिक परंपराओं और समुदाय के फॉर्मेट के लिए अनुकूलन यानी अडैप्टेशन की आवश्यकता हो सकती है। मार्गदर्शकों को प्रशिक्षुओं को ऐसे साधन एक्सप्लोर करने में मदद करनी चाहिए जो व्यावसायिक और सांस्कृतिक जरूरतों को पूरा करते हों।

5.1.3 इंटरनेट संसाधन

इंटरनेट अनुवादकों और दुभाषियों के लिए बड़ी संख्या में उपयोगी संसाधन प्रदान करता है। इसमें भाषायी जानकारी शामिल है, उदाहरण के लिए शब्दावलियां, शब्दकोश, व्याकरण और स्टाइल गाइड, साथ ही व्यावसायिक जानकारी जैसे प्रोजेक्ट मैनेजमेंट, मार्केटिंग, ग्राहक संसाधन और अन्य विषय। इंटरनेट क्लाइंट से जुड़ने और अनुवाद व्यवसाय चलाने के लिए उपयोगी सॉफ्टवेयर साधन और प्लेटफॉर्म भी प्रदान करता है।

मार्गदर्शन प्रोग्राम में प्रासंगिक ऑनलाइन संसाधनों का लाभ उठाने के लिए सिफारिशें शामिल की जा सकती हैं। यह उन व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है जो इंटरनेट के अनुभवी उपयोगकर्ता नहीं हैं। एक अतिरिक्त विचार यह है कि हर किसी को इंटरनेट तक आसान पहुंच नहीं होती। ऐसी स्थिति में, मुफ्त या कम लागत वाली इंटरनेट पहुंच के लिए सुझाव उपयोगी हो सकते हैं। उदाहरणों में कुछ सार्वजनिक स्थान (लाइब्रेरी, कॉफी शॉप, समुदाय और शॉपिंग सेंटर) और सरकारी प्रायोजित या अन्य प्रोग्राम शामिल हैं जो कम लागत वाली इंटरनेट पहुंच प्रदान करते हैं।

5.2 मूल्यांकन

मार्गदर्शक और प्रशिक्षु को शुरुआत में एक साझा मूल्यांकन प्रणाली स्थापित करनी चाहिए, जिसमें प्रगति को ट्रैक करने के लिए स्पष्ट एरर कैटेगोराइजेशन फ्रेमवर्क शामिल हो। यह प्रणाली गलतियों को गंभीरता के मुताबिक रैंकिंग देती है, प्रमुख यानी मेजर (जैसे अशुद्धियां) से लेकर मामूली यानी माइनर (जैसे व्याकरण, स्टाइल) तक। मार्गदर्शक एरर टाइप का संदर्भ देकर या सारांश देकर फीडबैक दे सकते हैं। प्रगति का मूल्यांकन पॉइंट्स या पास/फेल सिस्टम के माध्यम से भी किया जा सकता है। मीटिंग के दौरान फीडबैक से गहन चर्चाओं में मदद मिलती है और प्रशिक्षुओं को गलतियों से सीखने और उन्हें सुधारने में मदद मिलती है, जिससे मूल्यांकन प्रक्रिया का निरंतर सुधार होना संभव होता है।

5.3 भूमिकाएं और जिम्मेदारियां

मार्गदर्शक गाइड, शिक्षक, सहायक, रक्षक और रोल मॉडल के रूप में कार्य करते हैं। वे ज्ञान साझा करते हैं, सीखने का सुरक्षित स्थान बनाते हैं, विकास को प्रोत्साहित करते हैं और सम्मानजनक व्यवहार के माध्यम से नेतृत्व करते हैं। उन्हें तैयार होकर आना चाहिए, नोट्स की समीक्षा करनी चाहिए, सामग्री लानी चाहिए, अनुभव साझा करने चाहिए और ईमानदार फीडबैक देना चाहिए। प्रशिक्षु सक्रिय भूमिका निभाते हैं: समय पर पहुंचना, तैयार होना और कार्य पूरा करना। उन्हें पहल करनी चाहिए, प्रश्न पूछने चाहिए, नोट्स लेने चाहिए और कही गई बातों का ठीक से पालन करना चाहिए। एक मजबूत मार्गदर्शन संबंध विकास के लिए सम्मान, जुड़ाव और जवाबदेही की मांग करता है।

5.4 रिकॉर्ड रखना

सुव्यवस्थित दस्तावेजीकरण से मार्गदर्शन प्रोग्राम में सहायता मिलती है। इसमें टाइमशीट, शेड्यूल, मीटिंग नोट्स, टेम्प्लेट, कानूनी दस्तावेज और जॉइंट प्रोजेक्ट फाइलें (शब्दावलियां, TM, सोर्स/टारगेट टेक्स्ट) शामिल हैं। मार्गदर्शक और प्रशिक्षु को सुरक्षित, सुलभ (बेहतर हो कि क्लाउड-आधारित) स्टोरेज

और स्पष्ट डायरेक्टरी स्ट्रक्चर के बारे में सहमत होना चाहिए। दस्तावेज कितने समय तक रखे जाएंगे, क्या उनका फिर से उपयोग किया जा सकता है और किसकी उन तक पहुंच होगी, इसे निर्धारित किया जाना चाहिए।

6 प्रगति की निगरानी

मार्गदर्शक और प्रशिक्षु को लक्ष्य, समय-सारणी और संचार योजना निर्धारित करनी चाहिए, साथ ही प्रगति को ट्रैक करने और मेंटरशिप की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के तरीके भी तय करनी चाहिए। परिणामों का मूल्यांकन करने के लिए साधन होने आवश्यक हैं।

6.1 लक्ष्य निर्धारित करना

प्रोग्राम की शुरुआत में, खास और हासिल किए जा सकने वाले लक्ष्यों (जैसे, किसी शैली में महारत हासिल करना या बोलने की आदतों में सुधार करना) की एक ऐसी सूची बनाएं जिसे सभी देख सकें और जिसकी प्रगति को ट्रैक किया जा सके। मार्गदर्शक पूरे किए गए लक्ष्यों को चिह्नित करके और आवश्यकतानुसार दृष्टिकोण को एडजस्ट करके प्रगति को ट्रैक कर सकते हैं। यह सूची मेंटरशिप की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने, असंबद्धता को रोकने और आवश्यक बदलावों का मार्गदर्शन करने में मदद करती है।

6.2 टाइम टेबल और कम्युनिकेशन

मार्गदर्शक और प्रशिक्षु को MMR की शुरुआत में टाइम टेबल और कम्युनिकेशन प्लान पर सहमत होना चाहिए। यह प्लान बताएगा कि वे कैसे और कब मिलेंगे (जैसे आमने-सामने, फोन द्वारा, या Zoom या Google Meet जैसे प्लेटफॉर्म पर वीडियो कॉल), समयसीमाएं और फीडबैक के बारे में कब चर्चा की जाएगी। प्रगति को ट्रैक करने में मदद करने के लिए, एक सरल चार्ट या चेकलिस्ट बनाई जा सकती है जिसमें मीटिंग की तारीखें और पूरा किया गया कार्य शामिल हो—जैसे अनुवादित शब्दों की संख्या, भाषांतरण या सबटाइटलिंग के मिनट या अन्य उपयोगी आउटपुट। कलर कोडिंग या सरल नोट्स (जैसे काम ट्रैक पर है तो हरा, देरी हो रही है तो लाल) से इसका आकलन करने में मदद मिल सकती है कि प्लान का पालन किया जा रहा है या नहीं। अगर कई मीटिंग्स छूट जाती हैं या काम में प्रगति नहीं हो रही है, तो यह सपोर्ट या प्रतिबद्धता की कमी जैसे मुद्दों का संकेत हो सकता है। इससे पहले कि मेंटरशिप खत्म हो, दोनों पक्षों को चुनौतियों के बारे में खुलकर संवाद करना चाहिए और शेड्यूल में बदलाव करने, उम्मीदों को एडजस्ट करने या कम्यूनिकेशन का तरीका बदलने पर विचार करना चाहिए। इस तरह का लचीलापन मेंटरशिप को प्रभावी और सहायक बनाए रखने में मदद कर सकता है।

प्रशिक्षुओं को मार्गदर्शक की सलाह लेने में सहज महसूस करना चाहिए और मार्गदर्शकों को उनके विकास में सक्रिय रूप से शामिल होना चाहिए, खुलेपन के सूचक के रूप में कम्युनिकेशन की फ्रीक्वेंसी की निगरानी करनी चाहिए। मार्गदर्शक द्वारा समय पर सवालों का जवाब देना मीटिंग के बीच प्रशिक्षु के किसी सवाल पर अटकने से बचने के लिए महत्वपूर्ण है; अगर संपर्क की कमी है तो संचार योजना की समीक्षा की जानी चाहिए। कितने ईमेल का आदान-प्रदान हुआ है, इसकी संख्या से संबंध की स्थिति का पता चल सकता है, हालांकि कम ईमेल होना हमेशा खराब नहीं होता। मेंटरशिप प्रक्रिया के बारे में नियमित चर्चाएं करने से मुद्दों की पहचान करने और उनका निपटारा करने में फायदा मिलता, जिससे शेड्यूल, कार्यों या व्यक्तिगत अभ्यास की आवश्यकता में संभावित एडजस्टमेंट हो सकता है। विभिन्न चैनलों के माध्यम से कारगर कम्युनिकेशन आपसी विश्वास और नॉलेज शेयरिंग को बढ़ावा देता है। चुनौतियों और समाधानों का दस्तावेजीकरण, यहां तक कि निजी तौर पर भी, प्रगति में सहायता कर सकता है और इससे भविष्य के मार्गदर्शन अनुभवों के बारे में पता चल सकता है।

7 परिशिष्ट

परिशिष्ट क - आपके मार्गदर्शन कार्यक्रम के लिए टेम्प्लेट

इस फोल्डर <Mentoring_Template_ITI_hi.pdf> में **Mentoring_Template_ITI_hi** नाम की Excel फाइल को MS Excel स्प्रेडशीट या PDF के तौर पर खोलें। यह टेम्प्लेट इन दिशानिर्देशों में उल्लिखित सभी भागों को कवर करता है जिसमें भरने के लिए स्थान, चेकबॉक्स और बटन शामिल हैं। आप आवश्यकतानुसार इसे कम कर सकते हैं या अधिक कर सकते हैं।

परिशिष्ट B - शब्दावली

कंप्यूटर-असिस्टेड ट्रांसलेशन **(CAT)** साधन: कंप्यूटर सॉफ्टवेयर जो अनुवाद या भाषांतरण में सहायता करता है और इसमें ट्रांसलेशन मेमोरी, स्पेलिंग और ग्रामर चेकर्स, शब्दावली साधन और कॉर्पस साधन जैसी सुविधाएं शामिल हो सकती हैं।

कॉर्पस **[**बहु**.** कॉर्पोरा**]**: लिखित और बोले गए टेक्स्ट का एक बड़ा संग्रह जो विशेष सॉफ्टवेयर का उपयोग करके भाषीयी विश्लेषण के लिए उपयोग किया जाता है, इसे अक्सर ऑनलाइन सर्च साधन के माध्यम से एक्सेस किया जा सकता है।

स्वतंत्र अनुवादक या दुभाषिया: एक स्व-नियोजित व्यक्ति जो घंटे, दिन या पूरे किए गए जॉब के आधार पर अपना काम बेचता है।

शब्दावली: किसी विशेष ज्ञान क्षेत्र में शब्दों और उनकी परिभाषाओं की वर्णानुसार सूची, जो एक या कई भाषाओं में हो सकती है।

स्थानीयकरण: किसी उत्पाद या कंटेंट को बाजार की संस्कृति और भाषा के अनुसार बदलना।

मशीन ट्रांसलेशन: सॉफ्टवेयर जो भाषा के नियमों और आंकड़ों के आधार पर टेक्स्ट का अनुवाद करता है।

प्रशिक्षु: वह व्यक्ति जिसे मार्गदर्शक द्वारा सलाह दी जाती है, प्रशिक्षित किया जाता है या परामर्श दिया जाता है।

मार्गदर्शक: वह व्यक्ति जो प्रशिक्षु को सलाह या प्रशिक्षण देता है और आमतौर पर किसी विशेष क्षेत्र में अधिक अनुभव और ज्ञान रखता है।

मार्गदर्शक कार्यक्रम: एक कार्यक्रम जिसमें मार्गदर्शकों और प्रशिक्षुओं को पहले से निर्धारित ऐक्शन प्लान को पूरा करने के लिए एक साथ लाया जाता है।

मार्गदर्शक-प्रशिक्षु संबंध **(MMR)**: मार्गदर्शकों और प्रशिक्षुओं के बीच स्थापित एक साझेदारी जो व्यक्तिगत या व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए काम करती है।

गैर-प्रकटीकरण दस्तावेज **(NDA)**: दो या अधिक लोगों के बीच एक कानूनी अनुबंध जो जानकारी साझा करना चाहते हैं जबकि इसे तीसरे पक्ष से गोपनीय रखना चाहते हैं।

पीयर-टू-पीयर मेंटरिंग: दो लोगों के बीच स्थापित एक संबंध जो समान स्तर के ज्ञान और विशेषज्ञता रखते हैं ताकि जानकारी का आदान-प्रदान किया जा सके और अनुभव साझा किए जा सकें।

स्टाइल गाइड: एक दस्तावेज जो व्याकरण, टोन, विराम चिह्न, वर्तनी और फॉर्मेट नियम स्थापित करता है जो किसी संगठन के लिए विशिष्ट होते हैं।

शब्दावली साधन: साधन जो भाषा शब्दों का प्रबंधन करने और मान्य शब्दों के सर्च करने योग्य डेटाबेस बनाने में मदद करते हैं।

अनुवाद उद्योग: अनुवाद के क्षेत्र में व्यावसायिक गतिविधि।
ट्रांसलेशन मेमोरी: एक डेटाबेस जो पहले अनुवादित टेक्स्ट को स्टोर करता है।

इस दस्तावेज में उपयोग हुए संक्षिप्ताक्षर

CAT: कंप्यूटर-असिस्टेड ट्रांसलेशन
LDI: ट्रांसलेशन कॉमन्स लैंग्वेज डिजिटाइजेशन इनीशिएटिव
MMR: मार्गदर्शक-प्रशिक्षु संबंध (मेंटर-मेंटी रिलेशनशिप)
T&I: अनुवाद और भाषांतरण

अभिस्वीकृतियां

यह दिशानिर्देश ट्रांसलेशन कॉमन्स के लैंग्वेज डिजिटाइजेशन इनिशिएटिव के माध्यम से विकसित किया गया है। यह एक प्रयास है जो यूनेस्को के मूल-निवासी भाषाओं के अंतरराष्ट्रीय दशक के अनुरूप है। ये संसाधन मूल-निवासी और अल्पसंख्यक भाषा समुदायों को उनकी भाषाओं को ऑनलाइन लाने के लिए सशक्त बनाने का लक्ष्य रखते हैं।

अगर आपके समुदाय को आपकी भाषा को डिजिटलीकृत करने में मदद चाहिए तो krista@translationcommons.org से संपर्क करें या TranslationCommons.org पर जाएं।

ट्रांसलेशन कॉमन्स अपने कई वॉलंटियर को धन्यवाद देता है जिन्होंने इस दिशानिर्देश को तैयार करने में अपनी विशेषज्ञता और महत्वपूर्ण समय का योगदान दिया। TC बिना सूचना के किसी भी समय इस दस्तावेज को अपडेट कर सकता है और किसी भी संबंधित नुकसान के लिए उत्तरदायी नहीं है। फीडबैक स्वागत योग्य है और निर्देश /नियम सुधारने में मदद करता है।

मूल-निवासी अनुवादकों और दुभाषियों के लिए मार्गदर्शन के निर्देश /नियम संस्करण *1.0 - 2025*

संपादक*:* Kathryn Hoesly, Julie Anderson, Tex Texin, और Holly France

योगदानकर्ता*:* Jeannette Stewart, Barbara Werderitsch, Diana Nisterenkova-Chester, Nancy Matis, Catalina Natalini, Katalina Sere, Valérie Etienne, Birgit Böttner, Silvia Giancola, Sian Cooper, Barbara Pozzi, Nolwenn Peron, Monica Reis, Patricia Brenes, Gillian Shaw, Matteo Rozzarin, Valentina Mendez, Alan Stewart, Nikki Graham, Christopher Bruha

प्रतिक्रिया (फीडबैक)

यह दस्तावेज अभी भी तैयार किया जा रहा है, ट्रांसलेशन कॉमन्स इसकी पूर्णता के लिए समुदाय के योगदानों पर निर्भर करता है। इसे ओपन-सोर्स संसाधन के रूप में नियमित रूप से अपडेट किया जाएगा।

सुधार के लिए प्रतिक्रिया और सुझाव प्रोत्साहित किए जाते हैं
और krista@translationcommons.org पर भेजे जा सकते हैं।

ट्रांसलेशन कॉमन्स

डिजिटल सिस्टम पर अपनी भाषा का उपयोग करने में असमर्थता सूचना तक पहुंच, नागरिक जीवन में भागीदारी, और अपनी पहचान, मूल्यों और दृष्टिकोणों का प्रतिनिधित्व करने की क्षमता को गहराई से प्रभावित करती है। यह विशेष रूप से डायस्पोरा में समुदाय की सहमति निर्माण को सीमित करती है और वैश्विक ज्ञान में योगदान देने या समुदाय की भलाई को प्रभावित करने वाले नीति निर्णयों में शामिल होने के लिए बाधाएं पैदा करती है। यह डिजिटल एक्सक्लूजन सांस्कृतिक गलत प्रस्तुति या सांस्कृतिक विनियोग के जोखिम को भी बढ़ाता है।

इस महत्वपूर्ण आवश्यकता के जवाब में, ट्रांसलेशन कॉमन्स ने भाषा को डिजिटाइज करने की पहल *(LDI)* शुरू किया, जो भाषा समुदायों को उनकी भाषाओं को ऑनलाइन लाने में सहायता के लिए डिज़ाइन किया गया एक प्रमुख प्रोग्राम है। यह पहल यूनेस्को के मूलनिवासी भाषाओं का अंतरराष्ट्रीय दशक (IDIL 2022–2032) के साथ शामिल की गयी थी, जो सभी संस्कृतों के लिए भाषायी विविधता और डिजिटल समावेशन को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के महत्व पर जोर देती है।

ट्रांसलेशन कॉमन्स भाषा को डिजिटाइज करने का समर्थन करने, भाषायी पेशेवरों का मार्गदर्शन करने और वैश्विक भाषा उद्योगों के लिए ओपन-एक्सेस संसाधनों और साधन बनाने के लिए प्रतिबद्ध भाषा पेशेवरों का एक गैर-लाभकारी, स्वयंसेवक-आधारित समुदाय है। हमारा इंटरडिसिप्लनरी नेटवर्क भाषाविदों, अनुवादकों, दुभाषियों, शिक्षकों, टेक्नोलॉजिस्ट, छात्रों, टर्मिनोलॉजिस्ट और स्थानीयकरण विशेषज्ञों को शामिल करता है—जो समुदायों को सशक्त बनाने और न्यायसंगत डिजिटल एक्सेस का समर्थन करने के लिए मिलकर काम करते हैं।

LDI के केंद्र में जीरो टू डिजिटल सीरीज है जो कि भाषाविज्ञान, डिजिटल एक्सेसिबिलिटी और भाषा टेक्नोलॉजी के विशेषज्ञों द्वारा विकसित चरण-दर-चरण दिशानिर्देशों का एक व्यापक और व्यावहारिक संग्रह है। ये दिशानिर्देश डिजिटाइजेशन प्रक्रिया के हर चरण का समर्थन करते हैं, जिसमें भाषायी डेटा एकत्र करने और शब्दावलियों का प्रबंधन करने से लेकर डिजिटल सिस्टम में भाषा समर्थन को लागू करने तक शामिल है। ये निर्देशात्मक नहीं हैं, बल्कि समुदाय के विशिष्ट लक्ष्यों, क्षमता और संसाधनों के अनुकूल बनाए जा सकते हैं। पूरी सीरीज में, डेटा संप्रभुता, सांस्कृतिक स्वामित्व, स्थिरता और सूचित निर्णय लेने पर जोर दिया जाता है।

ये दिशानिर्देश एक व्यापक दर्शकों के लिए हैं, जिसमें मूल-निवासी भाषा पक्षपोषक और वक्ता, शोधकर्ता, शिक्षाविद, सरकारी एजेंसियां और एनजीओ, टेक्नोलॉजी डेवलपर और भाषा पेशेवर शामिल हैं।

डिजिटाइजेशन समुदायों को अनुकूलित सॉफ्टवेयर बनाने, मूल भाषा की सामग्री और शैक्षिक संसाधनों का विस्तार करने, और भविष्य की पीढ़ियों के लिए पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने में सक्षम बनाता है। यह भाषा दृश्यता को बढ़ावा देता है, अंतर-पीढ़ीगत संचरण का समर्थन करता है, और डिजिटल युग में

सार्थक भागीदारी को सुगम बनाता है। तकनीकी से परे, डिजिटाइजेशन सांस्कृतिक सशक्तिकरण और लचीलापन का एक शक्तिशाली कार्य है।

चाहे आपका समुदाय अपनी डिजिटाइजेशन यात्रा शुरू कर रहा हो या स्थापित कार्य पर निर्माण कर रहा हो, हमें उम्मीद है कि ये संसाधन एक विश्वसनीय आधार के रूप में काम करेंगे। ट्रांसलेशन कॉमन्स जटिल प्रक्रियाओं को सरल बनाने और सभी के लिए डिजिटल भागीदारी को अधिक प्राप्त करने योग्य बनाने के लिए वर्कशॉप, ट्यूटोरियल और विशेषज्ञ सहयोग भी प्रदान करता है। अतिरिक्त सामग्री के लिए, जिसमें पूर्ण जीरो टू डिजिटल सीरीज, केस स्टडीज, वीडियो और प्रस्तुतियां शामिल हैं, कृपया ट्रांसलेशन कॉमन्स की वेबसाइट पर जाएं।